PTEC

Monthly
NEWS LETTER

Volume 2 December, 2025 Issue 8

जीवन एक दौड़ है

जीवन वास्तव में एक निरंतर चलने वाली दौड़ है—जहाँ हर कदम हमारी दिशा तय करता है और हर गति हमारा भविष्य गढ़ती है। जन्म से लेकर लक्ष्य की प्राप्ति तक, हम चुनौती, संघर्ष, सीख और विकास के अनगिनत चरणों से गुजरते हैं। यही उतार–चढ़ाव हमारे व्यक्तित्व को गढ़ते हैं और हमें मजबूत बनाते हैं।

इस दौड़ में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हर व्यक्ति की राह अलग होती है। कोई तेज़ दौड़ता है, कोई धीरे—लेकिन जीत उसी की होती है जो निरंतर आगे बढ़ने का साहस रखता है। जीवन की यह दौड़ प्रतिस्पर्धा से अधिक आत्म-विकास की यात्रा है, जहाँ हमें हर दिन अपनी सीमाओं को लाँघना होता है।

सफलता केवल पहले आने में नहीं, बल्कि हिम्मत न हारने में है। गिरकर संभल जाना भी एक उपलब्धि है। मंज़िलें बदल सकती हैं, राहें मुड़ सकती हैं, लेकिन प्रयास कभी नहीं रुकना चाहिए। समय की गति किसी का इंतज़ार नहीं करती; इसलिए अवसरों को पहचानना और उनका सही उपयोग करना ही बुद्धिमानी है।

आज के शिक्षार्थियों, युवाओं और समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए यह संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है कि जीवन की इस दौड़ में धैर्य, अनुशासन और सकारात्मक सोच ही हमारे सबसे बड़े साथी हैं। अपनी गति बनाए रखें, स्वयं पर विश्वास रखें और लगातार सीखते रहें—क्योंकि यही वह सूत्र है जो हमें मंज़िल तक पहुँचाता है।

अंततः, जीवन की इस अनवरत दौड़ में वही विजयी होता है जो हार से नहीं डरता, चुनौतियों को अवसर मानता है और हर नए दिन को नई ऊर्जा के साथ शुरू करता है।

संपादकीय

क्रॉस कंट्री रेस के विजेता (Boys Group-A)

क्रॉस कंट्री रेस के विजेता (Boys Group-B)

क्रॉस कंट्री रेस के विजेता (Girls Group-A)

क्रॉस कंट्री रेस के विजेता (Girls Group-B)

जेवियर डे का अनुभव

जेवियर डे का अनुभव मेरे लिए बहुत ही खास रहा, क्योंकि यह मेरे जीवन का पहला जेवियर डे था। हमारा कार्यक्रम महाविद्यालय में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। शुरुआत में जेवियर हाउस के सभी छात्रों को चंदन का तिलक लगाकर स्वागत किया गया।

हम सबके लिए यह क्षण बहुत गर्व और खुशी का था। शिक्षकों और सहपाठियों ने हमें फूल देकर शुभकामनाएँ दीं और "Happy Feast" कह कर हमारा उत्साह बढ़ाया। पूरे कॉलेज में एक उत्सव जैसा माहौल था।

जेवियर डे के दिन हमारे यहाँ *Cross Country Race* का भी आयोजन किया गया। शुरुआत में हम सब बहुत उत्साहित थे, लेकिन जैसे ही दौड़ शुरू हुई, मेरी साँस फूलने लगी और एक पल को लगा कि शायद मैं पूरी दौड़ नहीं कर पाऊँगी। कभी दौड़ते-दौड़ते रुकना पड़ा, कभी धीरे-धीरे चलना पड़ा, पर मैंने हिम्मत नहीं छोड़ी।

अंततः मैंने पूरी रेस पूरी की—यह मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। अगर अंक अच्छे नहीं मिले, तो भी कोई बात नहीं, क्योंकि इस रेस ने मुझे एक जरूरी सीख दी—

अगर हम प्रयास करते रहें, तो कठिन रास्ते भी पार किए जा सकते हैं।

श्वेता कुमारी
प्रथम वर्ष 'अ'

जेवियर डे

ठंडी–ठंडी हवाओं से काँपती सुबह का वातावरण एक नए उत्साह के साथ Xavier Day की शुरुआत का संकेत दे रहा था। इस दिन का सभी को महीनों से इंतज़ार था, क्योंकि संत जेवियर पर्व के साथ-साथ *क्रॉस कंट्री रेस* का आयोजन भी होना था। हर किसी के चेहरे पर खुशी की चमक थी, लेकिन मन में थोड़ी बेचैनी भी—क्या हम रेस पूरी कर पाएँगे या नहीं? सुबह की *पवित्र मिस्सा* ने हमारे दिन को अत्यंत शांत, सुंदर और आध्यात्मिक बना दिया। संत जेवियर के जीवन-परिचय से प्रेरणा पाकर हम महाविद्यालय की ओर रवाना हुए।

कॉलेज पहुँचते ही एक अलग ही उत्सव का माहौल महसूस हुआ, क्योंकि हमारे महाविद्यालय का नाम भी संत जेवियर के नाम पर है। मुझे स्वयं को बहुत भाग्यशाली महसूस हुआ कि मैं इस विशेष दिन का हिस्सा हूँ।

जेवियर दल के सभी प्रशिक्षुओं और वक्ताओं के लिए यह अत्यंत खुशी का दिन था। हमारा स्वागत बड़े ही धूमधाम से चंदन-तिलक और फूलों के गुच्छे के साथ किया गया। इसके बाद जेवियर दल की ओर से संत जेवियर का संक्षिप्त जीवन-परिचय प्रस्तुत किया गया, जिसने हम सभी को गहराई से प्रेरित किया। संत जेवियर के जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि

"किसी की प्रगति में वास्तविक महत्व शारीरिक परिश्रम या कार्य की प्रकृति का नहीं होता, बल्कि उस कार्य को करने में संलग्न विश्वास और निष्ठा का होता है।" यह संदेश हमारे जीवन में आगे बढ़ने, मेहनत करने और अपने कार्य को पूरे मन, लगन और विश्वास के साथ करने के लिए हमें निरंतर प्रेरित करता रहेगा।

सरोज तोपनो
प्रथम वर्ष 'ब'

संत फ्रांसिस ज़ेवियर

सेवा, समर्पण और साहस का प्रकाशस्तंभ

संत फ्रांसिस ज़ेवियर (1506–1552) विश्व इतिहास के उन विरले व्यक्तित्वों में से हैं जिन्हें उनकी गहन आध्यात्मिकता, निःस्वार्थ सेवा-भाव और वैश्विक मानवीय योगदान के लिए सदियों बाद भी श्रद्धा के साथ स्मरण किया जाता है। वे कैथोलिक चर्च के सबसे प्रमुख मिशनरियों में गिने जाते हैं और 'जेसुइट संगठन' (सोसायटी ऑफ जीसस) के संस्थापक सदस्यों में एक थे।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

फ्रांसिस ज़ेवियर का जन्म 7 अप्रैल 1506 को स्पेन के नवारा प्रांत में स्थित ज़ेवियर किले में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। उनके माता-पिता धार्मिक, सुसंस्कृत एवं समाजोपयोगी विचारों वाले थे। बचपन से ही फ्रांसिस में अध्ययन के प्रति गहरी रुचि, नेतृत्व क्षमता और आसपास के लोगों की सहायता करने की भावना विकसित थी। उच्च शिक्षा के लिए वे पेरिस विश्वविद्यालय पहुँचे—जो उस समय यूरोप का प्रमुख ज्ञान केंद्र था।

यही पर उनकी भेंट इग्नेशियस लोयोला से हुई, जो बाद में उनके आध्यात्मिक गुरु और जीवन-मार्गदर्शक बने। इग्नेशियस के प्रेरणादायक विचारों तथा मानव-सेवा केंद्रित जीवन-दर्शन ने फ्रांसिस के जीवन को नई दिशा दी। उन्होंने आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्राप्त किया और 1534 में जेसुइट संगठन की स्थापना में सक्रिय भूमिका निभाई।

मिशनरी जीवन की शुरुआत

फ्रांसिस ज़ेवियर का जीवन यात्रा महाद्वीपों पर फैला एक महान अध्याय है। उनका उद्देश्य केवल धार्मिक संदेश का प्रचार करना नहीं था, बल्कि शिक्षा, मानवीय सहायता और सामाजिक उत्थान के माध्यम से लोगों के जीवन में आशा और प्रकाश फैलाना था।

1542 में वे पुर्तगाल के राजा के अनुरोध पर भारत भेजे गए। समुद्री यात्राओं के कठिन दौर को पार करते हुए वे गोवा पहुँचे, जहाँ उनकी महान सेवा यात्रा शुरू हुई।

भारत और गोवा में योगदान

गोवा में फ्रांसिस ज़ेवियर ने शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक upliftment के अनेक कार्य किए।

- उन्होंने *बच्चों के लिए विद्यालय स्थापित किए,* जहाँ शिक्षा के साथ-साथ अनुशासन, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का प्रशिक्षण मिलता था।
- वे अक्सर मछुआरों, श्रमिकों और गरीब परिवारों के बीच जाकर उनकी भाषा और संस्कृति का सम्मान करते हुए उनके बीच रहते थे।
- उन्होंने अशिक्षित समुदायों को शिक्षित करने का विशेष बीड़ा उठाया।
- फ्रांसिस का जीवन अत्यंत सादगीपूर्ण था; वे लोगों के दुख-दर्द सुनते, बीमारों की सेवा करते और निराश लोगों के लिए सांत्वना का आधार बनते थे।

आज भी गोवा में उनका कार्य सामाजिक और आध्यात्मिक प्रगति का प्रेरणास्रोत माना जाता है। गोवा में 'बॉम जीसस बेसिलिका' में उनका अवशेष रखा हुआ है, जहाँ हर वर्ष हजारों लोग श्रद्धा के साथ दर्शन करने आते हैं।

एशिया में यात्रा और कार्य

भारत के पश्चात फ्रांसिस ज़ेवियर ने जापान, मलक्का (मलेशिया), इंडोनेशिया तथा श्रीलंका सहित एशिया के अनेक क्षेत्रों का दौरा किया।

- **जापान में** वे शिक्षा और संवाद के माध्यम से लोगों तक ईश-प्रेम, शांति और नैतिकता का संदेश लेकर पहुँचे।
- उन्होंने स्थानीय भाषा सीखी, जापानी समाज की परंपराओं को सम्मान दिया और लोगों के साथ गहरी आत्मीयता विकसित की।
- उनका उद्देश्य केवल धार्मिक प्रचार नहीं था, बल्कि *सभ्यता, करुणा और मानवीय मूल्यों* का प्रसार करना भी था।

उनकी यात्राएँ हमेशा कठिन रहीं—कभी तूफानी समुद्र, कभी अनजान संस्कृतियाँ—परंतु उनका समर्पण कभी डगमगाया नहीं।

चीन की ओर अंतिम यात्रा

फ्रांसिस ज़ेवियर का अंतिम सपना चीन में मानव-सेवा और शिक्षण कार्य को आगे बढ़ाना था। 1552 में वे चीन की यात्रा पर निकले। परंतु चीन में प्रवेश की अनुमति न मिलने के कारण वे शांगचुआन द्वीप पर ही रुक गए। वहीं 3 दिसंबर 1552 को उन्होंने अपने सांसारिक जीवन की यात्रा पूरी की।

उनका निधन एक महान सेवक, शिक्षक और आध्यात्मिक पथिक के रूप में मानवता के लिए अविस्मरणीय प्रेरणा छोड़ गया।

जीवन-संदेश और विरासत

आज फ्रांसिस ज़ेवियर को दुनिया भर में *सेवा, प्रेम और समर्पण के प्रतीक* के रूप में सम्मानित किया जाता है। उनके जीवन से हमें यह सीख मिलती है—

शिक्षा और करुणा से समाज बदल सकता है।

दूसरों की संस्कृति और भाषा का सम्मान वास्तविक संवाद की नींव है।

सच्ची महानता गरीबी और दुख को दूर करने में है, न कि पद या प्रतिष्ठा में।

मानव-सेवा का मार्ग चुनने वाला व्यक्ति सदैव अमर हो जाता है।

उनकी विरासत आज भी विद्यालयों, संगठनों और सामाजिक आंदोलनों को प्रेरित कर रही है।

समापन

संत फ्रांसिस ज़ेवियर केवल एक मिशनरी नहीं थे, बल्कि मानवता का प्रकाशस्तंभ थे—एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने सीमाओं, संस्कृतियों और भाषाओं की दीवारें तोड़कर दुनिया को प्रेम और करुणा का संदेश दिया। उनका जीवन हम सभी को प्रेरित करता है कि हम जहाँ भी हों, अपने कर्मों से दूसरों के जीवन में उजाला फैलाएँ।

जेवियर डे का अनुभव

जेवियर डे का मेरा अनुभव अत्यंत मनोहर और प्रेरणादायक रहा। इससे पहले मुझे कभी भी जेवियर डे मनाने का अवसर नहीं मिला था, लेकिन इस महाविद्यालय में प्रवेश लेने के बाद मुझे कई कार्यक्रमों और विशेष दिनों को बड़े ही उत्साह और धूमधाम से मनाने का अवसर मिला है।

30 दिसंबर 2025 को जेवियर डे मनाया गया। जेवियर हाउस के सभी प्रशिक्षुओं का स्वागत करने की पूरी तैयारी महाविद्यालय में पहले ही कर ली गई थी। उनका स्वागत मधुर गीतों, फूलों के गुलदस्ते और तालियों की गड़गड़ाहट के साथ किया गया। महाविद्यालय परिवार ने उन्हें आगे के जीवन के लिए ढेरों शुभकामनाएँ भी दीं। इस दिन *क्रॉस कंट्री रेस* का आयोजन भी था। इसलिए रेस शुरू होने से पहले हम सभी छात्रवास के गेट पर एकत्रित हुए। यह मेरी पहली लंबी दौड़ थी, इसलिए मुझे थोड़ा डर और घबराहट महसूस हो रही थी, लेकिन फिर भी मैंने साहस करके इस दौड़ में भाग लेने का निर्णय लिया।

शुरुआत में मेरा जोश थोड़ा कम था, पर जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ती गई, मेरा आत्मविश्वास और उत्साह बढ़ता गया। धीरे-धीरे डर खत्म होने लगा और दौड़ने का आनंद आने लगा। अंत में मैंने **छठा स्थान प्राप्त** करते हुए रेस पूरी की—यह मेरे लिए गर्व का क्षण था।

दौड़ते समय थोड़ी परेशानियाँ भी आईं, लेकिन उनमें भी एक अलग ही मज़ा था। अन्य धाविकाओं को देखकर बचपन की वे यादें ताज़ा हो गयीं जब हम दौड़ में जीतने के लिए मैदान में तेज़ दौड़ लगाते थे। रेस के अंतिम चरण में खड़े प्रशिक्षुओं की आवाज़ें मेरे कानों में गूँज रही थीं, जो मेरे लिए हौसला बढ़ाने का बड़ा स्रोत बनीं। उनकी cheering ने मेरे जोश को कई गुना बढ़ा दिया।

इस प्रकार मेरा जेवियर डे का अनुभव अविस्मरणीय रहा—साहस, खुशी, प्रेरणा और उपलब्धि से भरा हुआ।

प्रतिभा टुडू
प्रथम वर्ष 'अ'

जेवियर डे का अनुभव

हमारे महाविद्यालय में 3 दिसंबर को *संत जेवियर दिवस* बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में जेवियर हाउस के सभी छात्रों का तिलक लगाकर गर्मजोशी से स्वागत किया गया। पूरे माहौल में उत्साह और आनंद की लहर देखने को मिली। इसके बाद जेवियर हाउस के समूह के छात्रों ने मंच पर आकर अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि भले ही जेवियर हाउस की ड्रेस हरा है, परंतु उसका महत्व और गरिमा अत्यंत विशेष है। शुरुआत में उनका समूह चौथे स्थान पर था, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। मेहनत, एकजुटता और निरंतर अभ्यास के बल पर वे चौथे स्थान से उठकर तीसरे स्थान तक पहुँच सके।

जेवियर हाउस के छात्रों ने अपने समूह की तुलना पौधे से की—जैसे पौधे के नीचे हरे पत्ते होते हैं और ऊपर रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं, उसी प्रकार अन्य हाउस ऊपर थे और जेवियर हाउस नीचे की पंक्ति में। लेकिन पत्तों की तरह उन्होंने आधार मजबूत किया, मेहनत की, और आगे बढ़ने का संकल्प लिया।

इस पूरे कार्यक्रम से हमें यह सीख मिलती है कि पीछे रहने से कभी भी खुद को कमजोर नहीं समझना चाहिए। नकारात्मक सोच को दूर रखकर, सकारात्मक विचारों और आत्मविश्वास के साथ मेहनत करते रहना चाहिए। प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाते—एक दिन अवश्य सफलता हमारे कदम चूमती है।

सांजो मारंडी
प्रथम वर्ष 'अ'

संत जेवियर पर्व का अनुभव

"अपने समय और प्रतिभा को दूसरों की भलाई के लिए समर्पित करो।"

3 दिसंबर को हमारे महाविद्यालय में *संत जेवियर पर्व 2025* अत्यंत श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस विशेष अवसर पर जेवियर हाउस के सभी प्रशिक्षणार्थियों का सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया। उन्हें बधाई गीत और सुंदर गुलदस्ता देकर आदर का भाव व्यक्त किया गया। पूरे परिसर में उत्सव और खुशी का वातावरण छा गया था।

यह दिन मेरे लिए बहुत ही खास और गौरवपूर्ण था, क्योंकि यह मेरे जीवन का पहला संत जेवियर पर्व था और मैं स्वयं भी *जेवियर हाउस* की सदस्य हूँ। इस कारण मेरी खुशी और उत्साह दोगुना हो गया। उस दिन *क्रॉस कंट्री रेस* का भी आयोजन किया गया, जिसने कार्यक्रम को और भी रोचक बना दिया। मेरे सहपाठियों, शिक्षकों और अन्य हाउस के छात्रों ने हमें "Happy Feast" कहकर गर्मजोशी से शुभकामनाएँ दीं। सभी ने हमारी खुशी में शामिल होकर इस पर्व को और भी अर्थपूर्ण बना दिया। उस क्षण मुझे यह महसूस हुआ कि मैं वास्तव में बहुत भाग्यशाली हूँ कि ऐसे परिवार जैसे वातावरण वाले महाविद्यालय में अध्ययन कर रही हूँ। **"जहाँ भी जाओ, वहाँ खुशियों और प्रेम की किरण फैलाओ।"** इसी संदेश को अपने भीतर सँजोए, मैंने संत जेवियर के जीवन-आदर्शों को और गहराई से महसूस किया। संत जेवियर पर्व मेरे लिए अत्यंत प्रेरणादायक और स्मरणीय अनुभव रहा।

समीरा तिर्की
प्रथम वर्ष 'अ'

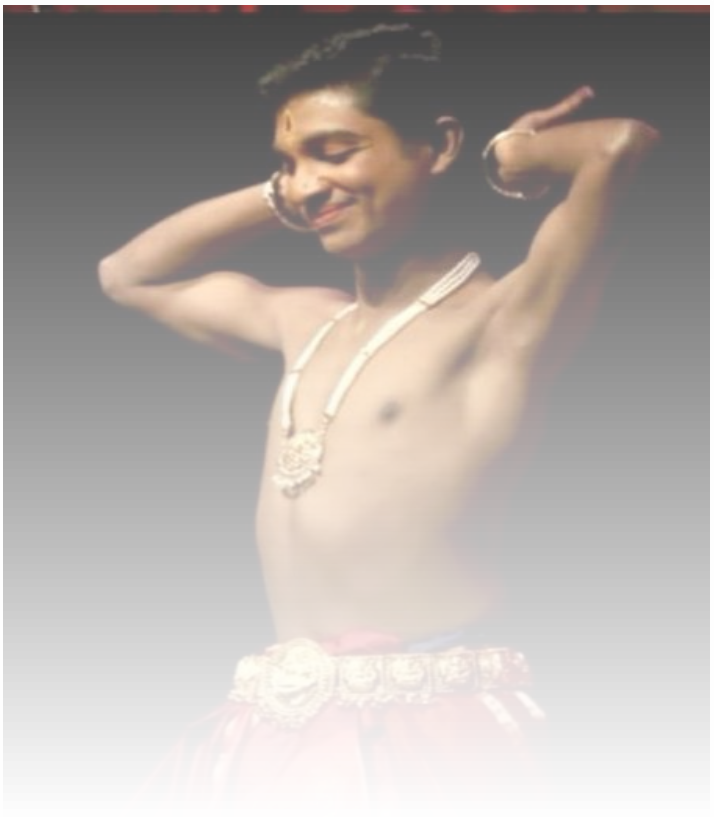

नृत्य प्रतियोगिता

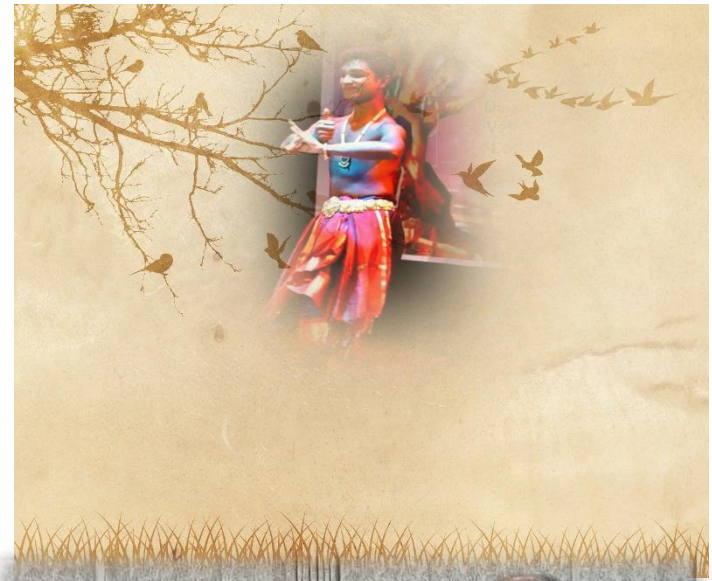

मैं अपने नृत्य प्रदर्शन के बारे में अपने अदभुत अनुभव को साझा करने में बहुत खुश हूँ, जिसमें मैंने "झंकार" अखिल भारतीय राष्ट्रीय नृत्य, संगीत महोत्सव और प्रतियोगिता सीजन 10 में भाग लिया था। जो 29 नवंबर 2025 को " लोक कला मंच" नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। महोत्सव का आयोजन डॉ शगुफ्ता खान ने किया था। मैंने भरतनाट्यम नृत्य शैली में ओपन आयु वर्ग के 'स्लॉट में भाग लिया था। मैंने ओपन श्रेणी के स्लॉट में प्रथम स्थान जीता और मुझे नृत्य गुरु भी वीणा मैम (कथक नृत्यांगना) द्वारा प्रमाण पत्र और ट्रॉफी के रूप में ढेर सारे आशीर्वाद और प्यार से सम्मानित किया गया। संगीत के जज गुरु श्री रजनीश सर (तबला वादक) द्वारा भी बहुत सराहना मिली और वहाँ मौजूद अन्य कलाकारों ने भी सराहना की। यह कार्यक्रम सरकार के माध्यम से पंजीकृत था जो कि नीति आयोग है।

मैंने अपने प्रस्तुति द्वारा दर्शकों के मन-दिल को आकर्षित कर सका क्योंकि मुझे ऐसा लगा कि जीवन में अपने कला के प्रति त्याग, तपस्या और साधना मुझे बड़े गुरुजनों एवं बड़े कलाकारों के समक्ष उत्कृष्ट प्रस्तुति देने में सक्षम रहा। गुरुजनों एवं बड़े कलाकारों का व्यवहार एवं प्रस्तुति मुझे बहुत प्रभावित किया। उनका नृत्य के प्रति समर्पण उनके नृत्य पर झलक रहे थे। मुझे बहुत खुशी एवं गर्व महसूस हो रहा है कि मेरे प्रस्तुति को देखकर अन्य कलाकार भी प्रभावित हुए और गुरुजनों के द्वारा जीवन में बहुत आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

64वीं वार्षिक खेलकूद 2025 का अनुभव

PTEC में यह मेरा पहला वार्षिक खेलकूद था, जिसमें भाग लेने का अवसर पाकर मैं अत्यंत उत्साहित था। यद्यपि मैं प्रतियोगिता में जीत नहीं पाया, फिर भी इस अनुभव ने मुझे यह सिखाया कि सफलता के लिए निरंतर अभ्यास और दृढ़ संकल्प आवश्यक हैं।
इससे पूर्व जिस संस्थान में मैंने अध्ययन किया था, वहाँ वार्षिक खेलकूद का आयोजन परेड और मशाल जुलूस के साथ प्रारंभ होता था। किंतु इस महाविद्यालय में परेड के बाद ड्रिल प्रस्तुत की गई, जो मेरे लिए बिल्कुल नया और रोचक अनुभव था। ड्रिल को मैंने पहली बार यहीं सीखा, जिसे सीखकर मुझे बहुत खुशी और गर्व महसूस हुआ।

इस प्रतियोगिता में बाधा दौड़ (Obstacle Race) का भी आयोजन किया गया, जिसमें भाग लेना मेरे लिए एक नया अवसर था, क्योंकि मैंने इससे पहले कभी इस प्रकार की दौड़ नहीं देखी थी। महाविद्यालय परिसर ने मुझे इसे देखने, समझने और अनुभव करने का मौका दिया।

अतः कहा जा सकता है कि खेल हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा हैं। खेलों के माध्यम से न केवल शारीरिक क्षमता बढ़ती है, बल्कि व्यक्तित्व में अनुशासन, आत्मविश्वास और निखार भी आता है।

अनिल डुंगडुंग
प्रथम वर्ष 'अ'

वार्षिक खेलकूद का अनुभव

हमारे महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें सभी विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। पूरे महाविद्यालय का वातावरण उत्साह और ऊर्जा से भर गया था। चारों ओर खेलभावना और उत्सव का माहौल दिखाई दे रहा था।

मैं भी इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए अत्यंत उत्साहित थी। इससे पहले मैंने कभी इतने बड़े स्तर पर आयोजित खेलकूद में भाग नहीं लिया था, इसलिए मन में डर और संकोच दोनों थे—लोग क्या कहेंगे, मैं कर पाऊँगी या नहीं। लेकिन जैसे ही मैदान में पहुँची, मेरा सारा डर दूर हो गया और मन में आत्मविश्वास बढ़ता गया।

इस वर्ष मुझे कई नए खेलों के बारे में जानने का अवसर मिला—जैसे **गोला फेंक**, **भाला फेंक**, **चक्का फेंक** आदि। ये खेल मेरे लिए बिलकुल नए थे। दूसरों को इन खेलों में भाग लेते हुए देखकर मुझे भी प्रेरणा मिली। शुरुआत में मुझे लगा कि शायद मैं यह सब नहीं कर पाऊँगी, परंतु प्रयास करते-करते बहुत कुछ सीखने को मिला।

सबसे चुनौतीपूर्ण अनुभव मेरे लिए **800 मीटर दौड़** था। ऐसा लग रहा था जैसे यह "पहाड़ तोड़ने" जैसा कठिन कार्य हो। मन में बार-बार सवाल उठ रहा था—क्या मैं दौड़ पाऊँगी? क्या मैं बीच में थक जाऊँगी? परंतु अपने मनोबल और जज़्बे के साथ मैंने धीरे-धीरे दौड़ शुरू की और अंत तक पहुँचकर जीत हासिल की। उस क्षण मुझे अत्यंत खुशी हुई और आत्मविश्वास भी बढ़ा।

इस प्रतियोगिता का शुभारंभ महाविद्यालय प्रांगण से मुख्य अतिथि की अगवानी के साथ हुआ। उन्हें बैज और गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया। इसके बाद तीनों संस्थानों के विद्यार्थियों ने मिलकर आकर्षक **मार्च-पास्ट** और **ड्रिल** प्रस्तुत किया। ड्रिल मेरे लिए बिल्कुल नया अनुभव था, और इसे सीखना रोमांचक रहा।

प्रतियोगिताएँ जैसे-जैसे आगे बढ़ीं, छात्रों का उत्साह भी बढ़ता गया। प्रत्येक प्रतिभागी ने पूरे मन और जोश के साथ हिस्सा लिया। प्रतियोगिता समाप्त होने के बाद सभी ने एक-दूसरे को बधाई दी और खूब मस्ती भी की।

इस पूरे आयोजन ने मुझे यह सिखाया कि **किसी भी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए प्रयास, आत्मविश्वास और मेहनत आवश्यक है।** पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि खेल से अनुशासन, आत्मविश्वास और शारीरिक क्षमता बढ़ती है।

अंजु आइन्द
प्रथम वर्ष 'अ'

वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता का अनुभव

हमारे महाविद्यालय में आयोजित वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता में हमने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता ने मुझे कई नए अनुभव दिए, जो मेरे भविष्य के लिए बहुत उपयोगी साबित होंगे। सबसे पहले, मैंने यह सीखा कि एक शिक्षक के रूप में प्रतियोगिताओं का संचालन कैसे किया जाता है, बच्चों को अनुशासन में कैसे रखा जाता है, तथा विभिन्न गतिविधियों को समय पर कैसे संपन्न कराया जाता है। इस वर्ष की वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता बहुत ही सफलतापूर्वक और सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न हुई। सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने खेलों में पूरे मन, अनुशासन और लगन के साथ हिस्सा लिया। मैंने भी कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया, जिससे मुझे अपनी क्षमताओं को पहचानने का अवसर मिला।

खेलकूद में भाग लेकर मुझे स्वयं पर गर्व महसूस हुआ, क्योंकि इससे मुझे पता चला कि मुझमें कितनी शारीरिक क्षमता और सहनशक्ति है। इस प्रतियोगिता ने मुझे अपने अंदर छुपी संभावनाओं को बाहर निकालने का अवसर दिया। खेल के माध्यम से जो आत्मविश्वास मिला, वह मेरे लिए अत्यंत मूल्यवान है। अंततः, यह वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता मेरे लिए आत्म-खोज, सीख और आनंद का एक सुंदर अवसर रही।

अलबिन किड़ो
प्रथम वर्ष 'अ'

Annual Sports Day, 2025

"Talent and intelligence may win games, but teamwork and dedication win championships." Games and sports play an important role in education. They keep us physically fit, mentally active, and socially connected.

This year's Annual Sports Day was one of the most exciting and awaited events of our institution. It was held on **6th December 2025**, and it was my first experience participating in this grand event. The Sports Day was organized in collaboration with the **Middle School, High School and PTEC**, which made it even more vibrant and memorable.

Our college has four houses—**Red, Yellow, Green, and Blue**—and I belong to the **Blue House**. Students actively participated in various events, showcasing their skills, enthusiasm, and sportsmanship. Through these activities, I got an opportunity to strengthen my bonds with my trainee-mates and teachers.

The motivational words delivered by the chief guest truly touched my heart and encouraged me to participate more actively and learn new things in life.

All the events were conducted smoothly. Everyone's hard work, preparation, excitement, and active participation could clearly be seen. The dedication it took to make the event successful brought bright smiles to the faces of our guests and audience. They expressed their appreciation and gave very positive feedback.

Personally, I feel very happy because **our house—Blue House—won the Championship Trophy this year.** From being in the 3rd position last year, our house jumped to the 1st position. This was possible only because we worked as a team, supported one another, and gave our best.

Winning or losing is a natural part of sports. What matters most is the learning and growth that come with participation. Everyone learned something valuable from this event. Therefore, each participant deserves congratulations and best wishes for being a part of this grand programme of our institution.

Akriti Lakra
First year 'B'

वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता

वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता विद्यार्थियों के जीवन में विशेष महत्व रखती है। यह केवल खेल का आयोजन नहीं, बल्कि ऊर्जा, अनुशासन और आत्मविश्वास को प्रकट करने का अवसर होती है। जैसे जीवन में पढ़ाई आवश्यक है, उसी प्रकार खेल-कूद भी शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

दिनांक **06-12-2025** को हमारे **महाविद्यालय** में वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, अभिभावकगण तथा अन्य विद्यालयों से आए अतिथि भी उपस्थित थे। सभी की उपस्थिति से कार्यक्रम और भी गरिमामय बन गया।

कार्यक्रम की शुरुआत अनुशासनपूर्ण परेड से हुई, जिसने सभी को प्रभावित किया। विद्यार्थियों ने पूरे अनुशासन और उत्साह के साथ विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया। खिलाड़ियों की लगन, टीम-वर्क और खेल भावना देखने योग्य थी। प्रतियोगिताओं के दौरान सभी दलों ने अपने-अपने रंग-बिरंगे झंडों के साथ खेल भावना का परिचय दिया।

हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों के प्रदर्शन की सभी अतिथियों ने सराहना की। अन्य विद्यालयों से आए प्रतिभागियों ने भी आयोजन की प्रशंसा की, जिसे सुनकर हमें अत्यंत गर्व और खुशी हुई। इस आयोजन ने यह सिद्ध कर दिया कि खेल न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि जीवन में कुछ अच्छा करने और सकारात्मक सोच विकसित करने की प्रेरणा भी देते हैं।

मेरे लिए यह अनुभव और भी खास रहा, क्योंकि यह मेरे कॉलेज जीवन की **पहली वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता** थी। इसमें शामिल होकर मुझे अत्यंत आनंद और आत्मसंतोष की अनुभूति हुई। यह दिन मेरे लिए हमेशा यादगार रहेगा।

अंजली कुमारी
प्रथम वर्ष 'ब'

वार्षिक खेल-कूद का अनुभव

हम सभी ने इस वर्ष आयोजित वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लिया। PTEC के प्रशिक्षु विद्यार्थियों सहित सभी छात्र इस प्रतियोगिता में शामिल हुए। पहले मुझे खेलों का महत्व उतना स्पष्ट नहीं था, किंतु इस संस्थान में आकर खेल-कूद के वास्तविक महत्व को समझने का अवसर मिला। यहाँ के विद्यार्थियों को खेलों में भाग लेते हुए देखना बहुत प्रेरणादायक रहा।

इस वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता में विभिन्न प्रकार के खेल आयोजित किए गए, जैसे—लंबी कूद, ऊँची कूद, गोला फेंक तथा क्रॉस कंट्री दौड़। इन खेलों ने हमें अनुशासन में रहना सिखाया, मानसिक रूप से मजबूत बनाया और शारीरिक क्षमता को निखारने में सहायता की। खेलों के माध्यम से आत्मविश्वास बढ़ता है और जीवन की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति मिलती है। मैंने भी इस प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रारंभ में मुझे कुछ प्रतियोगिताओं में सफलता नहीं मिली, परंतु **क्रॉस कंट्री दौड़** में मैंने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। इस दौड़ में मेरा स्थान **13वाँ** रहा। यद्यपि मैं प्रथम स्थान प्राप्त नहीं कर सका, फिर भी अपने कई साथियों से आगे निकलकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। यह मेरे लिए एक बड़ी उपलब्धि थी और इस अनुभव ने मुझे दौड़ के प्रति और अधिक रुचि विकसित करने की प्रेरणा दी।

इस वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता के अंतिम क्षण अत्यंत उत्साहपूर्ण थे। सभी दलों ने सामूहिक रूप से भाग लिया और खेल भावना का परिचय दिया। इस अनुभव से मैंने यह सीखा कि जीवन में जीतना ही सब कुछ नहीं होता, बल्कि प्रयास करना, मेहनत करना और लक्ष्य की ओर निरंतर आगे बढ़ते रहना ही वास्तविक सफलता है। यह वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता मेरे लिए एक यादगार अनुभव रही, जिसने मुझे अनुशासन, परिश्रम और आत्मविश्वास का महत्व सिखाया।

अभय कुजूर
प्रथम वर्ष 'ब'

वार्षिक खेल-कूद का अनुभव

इस कॉलेज में पढ़ाई करते हुए वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता में भाग लेना और **मेडल जीतना** मेरे लिए बिल्कुल अप्रत्याशित अनुभव था। क्योंकि मेरे पूरे स्कूल जीवन और +2 तक की पढ़ाई के दौरान मैंने कभी कोई मेडल नहीं जीता था। इसलिए यह उपलब्धि मेरे लिए विशेष और भावनात्मक रही। इस वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता में भाग लेने का मेरा एक ही उद्देश्य था—**जीत या हार की चिंता किए बिना पूरे मन, लगन और ईमानदारी से खेलना**, तथा सभी नियमों और अनुशासन का सही ढंग से पालन करना। मैंने यह ठान लिया था कि मैदान में उतरकर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करूँगा। मिडिल स्कूल से लेकर +2 तक मैंने खेलों के बारे में जितना नहीं सीखा था, उससे कहीं अधिक मैंने यहाँ **PTEC में आयोजित 64वीं वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता** में भाग लेकर सीखा। इस प्रतियोगिता के माध्यम से मुझे खेलों के नियम, अनुशासन, आयोजन की प्रक्रिया और खेल भावना को नज़दीक से समझने का अवसर मिला। साथ ही, मेडल प्राप्त करना मेरे लिए एक बड़ी प्रेरणा बन गया। जब मैंने पहली बार इस प्रतियोगिता में भाग लिया, तो मुझे बहुत अच्छा और खुशी का अनुभव हुआ। लेकिन जब मेरे गले में मेडल डाले गए और प्रमाण-पत्र प्राप्त हुआ, तो उस क्षण मुझे अत्यंत गर्व महसूस हुआ। ऐसा लगा मानो मैदान में उतरने से पहले जो सपने और मनोकामनाएँ थीं, वे साकार हो गई हों।

आज जब मैं अपने विद्यार्थी जीवन पर गहराई से विचार करता हूँ, तो लगता है कि यह अनुभव मेरे लिए **एक नई शुरुआत** है। इसने मुझे सिखाया कि निरंतर प्रयास, आत्मविश्वास और धैर्य से हर लक्ष्य को पाया जा सकता है। अंत में यही सीख मन में उभरती है— **"वही सच्चा बाज़ीगर है जो कभी रुकता नहीं, और जीतकर भी विनम्र रहता है—वही असली खिलाड़ी होता है।"**

अभिषेक टोप्पो
प्रथम वर्ष 'ब'

महाविद्यालय का वार्षिक खेल दिवस

आज हमारे महाविद्यालय में 64वें वार्षिक खेल-कूद समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में महाविद्यालय के सभी धावक और धाविकाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों में भारी उत्साह देखने को मिला। खेल के मैदान में अनुशासन और व्यवस्था देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। यह दिन हम सभी के लिए एक अविस्मरणीय दिन बन गया है। मैं इस दिन की बहुत लंबे समय से प्रतीक्षा कर रही थी। खेलों से न केवल हमारा शारीरिक विकास होता है, बल्कि हमारी तार्किक और मानसिक शक्ति भी बढ़ती है। खेल के दौरान खिलाड़ियों में ईमानदारी और एकता की भावना साफ दिखाई दे रही थी। कार्यक्रम का समापन बहुत ही शांतिपूर्वक और सफलता के साथ हुआ।

मेरे लिए यह अनुभव बहुत खास था क्योंकि मैंने अपने स्कूली जीवन में कभी इतना भव्य खेल आयोजन नहीं देखा था। यहाँ आकर मेरा यह सपना साकार हुआ। इस खेल दिवस से मुझे अनुशासन और खेल भावना के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला, जिसे मैं भविष्य में अपने जीवन में अवश्य लागू करूँगी।

एलिस केरकेट्टा
द्वितीय वर्ष 'ब'

स्टाफ पिकनिक — सौहार्द, सहयोग और प्रकृति से साक्षात्कार

दिनांक 13 **दिसम्बर** 2025 को डूमर में PTEC के स्टाफ पिकनिक का सफल एवं यादगार आयोजन किया गया। इस पिकनिक में महाविद्यालय के सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे और सभी ने पूरे उत्साह व उमंग के साथ अपनी सक्रिय सहभागिता निभाई।

पिकनिक के दौरान छोटे-बड़े सभी कार्यों में स्टाफ सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। मिल-जुलकर स्वादिष्ट भोजन तैयार किया गया और सामूहिक रूप से वनभोज का आनंद लिया गया। पकवान बनाने में सभी की रचनात्मकता देखने को मिली, जहाँ नए-नए तरीकों और विचारों का प्रयोग हुआ। इस सहयोगात्मक प्रयास से न केवल स्वाद बढ़ा, बल्कि सभी के आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई।

डूमर का प्राकृतिक वातावरण पिकनिक की विशेष आकर्षण रहा। पहाड़ों के बीच स्थित यह स्थल अत्यंत मनोरम और शांत वातावरण से भरपूर है। स्टाफ के सभी सदस्यों ने वनभोज के साथ-साथ प्रकृति की सुंदरता का भी भरपूर आनंद लिया। हँसी-खुशी और आपसी संवाद से वातावरण अत्यंत सकारात्मक बना रहा, जिससे टीम स्पिरिट और आपसी सामंजस्य और अधिक मजबूत हुआ।

इस सफल आयोजन के लिए **फादर प्रिंसिपल** का हार्दिक धन्यवाद, जिनके मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से यह पिकनिक संभव हो सकी। साथ ही, डूमर के **फादर अरुण** को भी विशेष रूप से धन्यवाद, जिन्होंने स्थान उपलब्ध कराने के साथ-साथ सभी आवश्यक सुविधाएँ प्रदान कीं।

यह स्टाफ पिकनिक न केवल मनोरंजन का माध्यम बनी, बल्कि आपसी सहयोग, विश्वास और एकता को सुदृढ़ करने का भी सशक्त अवसर सिद्ध हुई। निश्चित ही यह अनुभव सभी के लिए लंबे समय तक स्मरणीय रहेगा।

जीवन में परीक्षा का महत्व

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय में हाल ही में सेमेस्टर–I एवं सेमेस्टर–III की परीक्षाएँ सफलतापूर्वक संपन्न हुईं। परीक्षा केवल विद्यार्थियों के ज्ञान को परखने का माध्यम नहीं होती, बल्कि यह उनके धैर्य, अनुशासन, आत्मविश्वास और समय प्रबंधन की भी परीक्षा होती है। जीवन में परीक्षा का महत्व अत्यंत व्यापक और गहरा है।

परीक्षा हमें नियमित अध्ययन करने, लक्ष्य निर्धारित करने और मेहनत के महत्व को समझने की प्रेरणा देती है। परीक्षाओं के माध्यम से विद्यार्थी अपनी क्षमताओं का मूल्यांकन कर पाते हैं और यह जान पाते हैं कि उन्हें किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। इससे आत्ममंथन की भावना विकसित होती है, जो जीवन में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है।

जीवन स्वयं एक निरंतर परीक्षा है। हर मोड़ पर हमें निर्णय लेने, समस्याओं का सामना करने और चुनौतियों से जूझने की आवश्यकता पड़ती है। जैसे परीक्षा में सफलता के लिए तैयारी, धैर्य और आत्मविश्वास जरूरी होता है, वैसे ही जीवन में भी सफलता इन्हीं गुणों से प्राप्त होती है। असफलता हमें निराश नहीं, बल्कि मजबूत बनाती है और आगे बेहतर करने की सीख देती है।

अंततः कहा जा सकता है कि परीक्षा जीवन का अभिन्न अंग है। यह हमें मेहनत करना सिखाती है, आत्मविश्वास बढ़ाती है और सफलता की राह दिखाती है। इसलिए परीक्षा को बोझ नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व को निखारने का अवसर समझना चाहिए।

शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए परीक्षा का महत्व और भी अधिक है, क्योंकि भविष्य में वही शिक्षक बनकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे। परीक्षा उन्हें उत्तरदायित्व, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा का पाठ पढ़ाती है। एक अच्छा शिक्षक वही होता है, जो स्वयं अनुशासन और परिश्रम का उदाहरण प्रस्तुत करे।

क्रिसमस गैदरिंग : एक स्मरणीय कार्यक्रम

(Primary Teachers Education College)

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय में **शनिवार, दिनांक 20 दिसंबर 2025** को क्रिसमस गैदरिंग अत्यंत हर्षोल्लास, श्रद्धा और सांस्कृतिक उल्लास के साथ मनाया गया। यह कार्यक्रम प्रेम, शांति, त्याग और सेवा के संदेश को आत्मसात करने का सुंदर अवसर रहा। महाविद्यालय परिसर को आकर्षक ढंग से सजाया गया था, जिससे पूरे वातावरण में उत्सव की रौनक दिखाई दे रही थी।

कार्यक्रम की शुरुआत **क्रिसमस परिचय (Introduction)** से हुई, जिसमें प्रभु यीशु मसीह के जन्म के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इसके पश्चात **चरनी की आशीष (Blessing of the Crib)** की गयी, जिसने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक शांति से भर दिया। इसके बाद सभी की उपस्थिति में **केक कटिंग** समारोह संपन्न हुआ, जिसने आपसी प्रेम और आनंद को और अधिक बढ़ा दिया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में द्वितीय वर्ष की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत **प्रार्थना नृत्य** ने सभी को भाव-विभोर कर दिया। प्रथम वर्ष के छात्रों द्वारा प्रस्तुत **कैरल सिंगिंग** ने प्रभु जन्म की खुशी को मधुर स्वरों में व्यक्त किया। इसके बाद प्रथम वर्ष की छात्राओं ने **हिंदी क्रिसमस गीत** पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया, जबकि द्वितीय वर्ष के छात्रों ने **नागपुरी क्रिसमस गीत** पर नृत्य कर स्थानीय संस्कृति की सुंदर झलक प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य **फादर पी. जे. जेम्स एस.जे.** द्वारा दिए गए आशीर्वचनों ने सभी को नैतिक मूल्यों, प्रेम और सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। अंततः **धन्यवाद ज्ञापन (Thanksgiving)** के साथ कार्यक्रम का सफल समापन हुआ।

यह क्रिसमस समारोह न केवल एक उत्सव था, बल्कि प्रशिक्षणार्थियों के लिए आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों को समझने का एक सार्थक अनुभव भी रहा, जो सभी की स्मृतियों में लंबे समय तक अंकित रहेगा।

MERRY CHRISTMAS

MERRY CHRISTMAS

"जीवन की कीमत और बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति"

आज के बदलते दौर में जीवन पहले से कहीं अधिक सुविधाजनक हुआ है, फिर भी आत्महत्या की घटनाएँ चिंताजनक रूप से बढ़ती जा रही हैं। विशेषकर किशोरों में यह प्रवृत्ति तेजी से देखने को मिल रही है। छोटी-छोटी परेशानियाँ, असफलताएँ, संबंधों में तनाव या आधुनिक जीवन की भागदौड़—इन सबके सामने कई युवा तुरंत हार मान लेते हैं। वे यह समझ नहीं पाते कि जीवन किसी खेल का मैदान नहीं है जहाँ एक हार के बाद मैदान छोड़ दिया जाए।

जीवन अमूल्य है।

हमें एक ही बार यह सुंदर जीवन मिलता है। इसकी हर साँस, हर क्षण अनमोल है। कठिनाइयाँ जीवन का हिस्सा हैं, परंतु कठिनाइयाँ अंत नहीं होतीं। संघर्ष हमें मजबूत बनाते हैं, पर आज का युवक संघर्ष करने के बजाय शॉर्टकट खोजने लगा है। सोशल मीडिया की चमक, दिखावे की संस्कृति और तुलना की आदत ने युवाओं के मन में अवास्तविक अपेक्षाएँ भर दी हैं। परिणामस्वरूप, जब जीवन उनकी कल्पना के अनुसार नहीं चलता, तो वे निराशा में घिर जाते हैं।

आत्महत्या समाधान नहीं, एक स्थायी भूल है।

जिस पल में व्यक्ति खुद को अकेला और कमजोर महसूस करता है, उसी पल उसे किसी अपने की जरूरत होती है—सुनने वाले की, समझने वाले की। कई बार एक छोटी-सी बातचीत, एक स्नेहपूर्ण स्पर्श या एक सकारात्मक शब्द किसी की जान बचा सकता है। इसलिए समाज, परिवार, शिक्षक और मित्र सभी की जिम्मेदारी है कि वे संवेदनशील रहें और बच्चों-युवाओं को यह एहसास कराएँ कि हर समस्या का हल है, बस आवश्यकता है धैर्य और संवाद की।

कठिनाइयों से भागना नहीं, उनका सामना करना सीखना चाहिए।

जीवन हमें बार-बार अवसर देता है। सफलता असफलताओं की ही देन होती है। अगर कोई दरवाज़ा बंद हो जाए, तो दूसरा खुलता ही है। हमारा कदम रुक सकता है, पर हमारी आशाएँ नहीं रुकनी चाहिए।

अंत में—

आत्महत्या न तो बहादुरी है और न ही समाधान। यह केवल अपनों को अंतहीन पीड़ा देती है और जीवन को समय से पहले समाप्त कर देती है। हमें युवाओं को यह सिखाना होगा कि जीवन एक अनमोल उपहार है—इसे जीने के लिए दिया गया है, छोड़ने के लिए नहीं।

जिंदगी को समझें, संवारें और सँजोएँ—क्योंकि यह दुबारा नहीं मिलती।

PRIMARY TEACHERS' EDUCATION COLLEGE

Gurwa, PO Sitagarha, Dist. Hazaribag 825 303, Jharkhand, INDIA

(A Christian Minority Institution under the Hazaribag Jesuits Education Society: Estd: 1958)

Recognized by ERC, NCTE vide order No. BR-E/E- 2/96/2799(12) dt 11.02.1997.

Mob. 8987903798 (O) 9835358073 (P) Email: info@ptecgurwa.org Website: www.ptecgurwa.org